LECTURE Topic- पूर्वाग्रह के मनोवैज्ञानिक स्रोत OR. Emotional Source of Prejudice:

Page No: 01
Date 27-05-20

स्थूल रूप पूर्वाग्रह की उत्पत्ति के स्रोत या कारक को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - सामाजिक और मनोवैज्ञानिक। इनमें सामाजिक कारक पूर्वाग्रह को अर्जित करने में सहायक होते हैं जबकि मनोवैज्ञानिक कारक पूर्वाग्रह के व्यक्तिगत आधार हैं।

Psychological Factors or Correlates or Emotional Sources of Prejudice :-

पक्षपात एक जटिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसके निर्माण में कुछ मनोवैज्ञानिक तत्व क्रियाशील होते हैं। पूर्वाग्रह के मनोवैज्ञानिक कारक अनेक और विविध हैं। भारत में विभिन्न जातियों, धर्मों, क्षेत्रों आदि के व्यक्तियों में उपस्थित पूर्वाग्रह के मूल में ईर्ष्या और द्वेष की भावनायें, परस्पर विरोधी विश्वास और संघर्ष की अभिवृत्तियाँ आदि मनोवैज्ञानिक तत्व देखे जा सकते हैं। आत्म सम्मान की भावना को ठेस पहुँचने पर व्यक्ति अन्य व्यक्तियों या समूहों से घृणा करने लगते हैं और उनके विषय में पूर्वाग्रह बना लेते हैं। पूर्वाग्रह के उन्मूलन के लिए सबसे पहले उसके मनोवैज्ञानिक कारकों का उन्मूलन आवश्यक है। इस प्रकार पक्षपात के निर्माण के प्रमुख मनोवैज्ञानिक स्रोत या तत्व या कारक निम्नांकित हैं —

1 रूढ़ियुक्तियाँ (Stereotypes):- किसी भी एक विषय से सम्बन्धित वास्तविकतायें पक्षपात के निर्माण में महत्व नहीं रखती। इसलिए पक्षपात अधिकतर मनुष्य या

समूह की कल्पनाओं पर आधारित होता है। पक्षपात को आकर्षक बनाने के लिए रूढ़ियुक्तियों को इस प्रकार विकृत ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि एक बाह्य समूह के प्रति अवहेलना, घृणा आदि की भावनायें पनप जाती हैं।

2. असमानता (Abnormality) :- एक मनुष्य के दूसरे मनुष्य से प्रेम, सहयोग और सहानुभूति पर स्वाभाविक व्यवहार निर्धारित होता है। वह मनुष्य दूसरी तरफ अस्वाभाविक मनोभावों के कारण अन्य मनुष्यों को नीच समझता है, घृणा करता है और उनके साथ अत्याचार करता है। यह अस्वाभाविकता उस समय पनपती है, जब किसी एक समूह के सदस्य मानसिक रूप से असमान्य होते हैं।

3. विफलता की भावना (Feeling of Failure):

व्यक्ति की कुछ स्वाभाविक आवश्यकतायें होती हैं। जब आवश्यकताओं की तुष्टि निरन्तर नहीं होती तो व्यक्ति में निराशा का जन्म होता है। इस निराशा से उसमें कुछ विरोधी प्रतिक्रियायें पनप जाती हैं जो कालान्तर में पक्षपात का एक आवश्यक अंग बन जाती हैं।

4. सांस्कृतिक निषेध (Cultural Taboos) :-

सांस्कृतिक नियमों तथा निषेधों का प्रभाव हर व्यक्ति पर पड़ता है। कोई भी व्यक्ति

Scanned with CamScanner

अपने को इन नियमों तथा निषेधों से पूर्णतया विमुक्त नहीं कर सकता। जब इस तरह के नियम या निषेध किसी भी समूह या समूह के सदस्यों के विरुद्ध होते हैं तो ऐसी परिस्थिति में पक्षपात पनपते हैं।

5. जटिल परिस्थिति (Complex situation) :-

कभी-कभी सामाजिक जीवन से सम्बन्धित कुछ जटिल परिस्थितियों के कारण लोग अपने को एक विशिष्ट मानसिक स्थिति में पाते हैं। इस विशिष्ट मानसिक स्थिति में व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों के प्रति विविध प्रकार के पक्षपातों का विकास होता है।

6. श्रेष्ठता की भावना (Feeling of Superiority) :-

किसी कारणवश एक समूह अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगता है। यह श्रेष्ठता का आधार तार्किक या अतार्किक कुछ भी हो सकता है। यदि यह इस प्रकार की भावना एक बार पनप जाती है तो समूह के सदस्य उनकी रक्षा करना चाहते हैं इसी के आधार पर पक्षपात पनप जाते हैं।

7. हताश आवश्यकतायें (~~Frustrat~~ Frustrated Needs) :- प्रत्येक व्यक्ति की अनेक प्रकार की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं होती हैं। यदि ये आवश्यकतायें पूरी नहीं होती तो उनमें बहुत सी व्याधियाँ

बन जाते हैं जो प्रतिद्वेष, घृणा आदि के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। इन आकांक्षाओं के कारण व्यक्ति अचेतन रूप से विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के विषय में तरह-तरह के पक्षपात बना लेता है।

8. दोषपूर्ण समायोजन (Maladjustment) :-

कभी-कभी समाज के लोग अपनी परिस्थितियों से और समाज के अन्य लोगों से ठीक प्रकार से समायोजन नहीं कर पाते। अनेक कारणों से उनमें तरह-तरह की मानसिक ग्रन्थियाँ बन जाती हैं। उनमें निराशा और असन्तोष बढ़ता जाता है। वे अपनी सामाजिक प्रवृत्तियों का ठीक प्रकार से शमन नहीं कर पाते। अतः उनमें अन्य व्यक्तियों और समूहों के प्रति घृणा, द्वेष और क्रोध आदि की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जाती हैं जिसके कारण वे नाना प्रकार के पक्षपात या पूर्वाग्रह बना लेते हैं।

9. आत्मरक्षा (Self Defence) :-

प्रत्येक व्यक्ति अपने अहं या आत्मा की रक्षा करना चाहता है और उसको चोट पहुँचने पर तीव्र प्रतिक्रिया करता है। इस प्रतिक्रिया में वह चोट पहुँचाने वाले व्यक्ति अथवा समूह के प्रति बैर, घृणा, द्वेष आदि विकसित कर लेता है और फलस्वरूप उसमें तरह-तरह के पक्षपात बन जाते हैं।

Scanned with CamScanner

10. सामाजिक अनुरूपता की चाह (Desire of Social Conformity):
प्रत्येक समाज में कुछ रीति-रिवाज, नियम, चलन, अन्धविश्वास, विचार, आदि प्रचलित होते हैं। सामाजिक अनुरूपता की चाह के कारण व्यक्ति इनके विषय में सोच-विचार किये बिना ही इनको मान लेता है जो पक्षपात का रूप धारण कर लेता है।

11. सीखना (Learning):

पक्षपात का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारण सीखना है। व्यक्ति अपने अधिकतर पक्षपात को समूह के अन्य लोगों से सीख लेता है।

Dr. S. K. Suman
Asst. Professor
Dept. of. Psychology
Marwari College, Darbhanga

Scanned with CamScanner